



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार पर
अंतर-सरकारी वार्ता (IGN)

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सुधार पर अंतर-सरकारी वार्ता (IGN)

सन्दर्भ

- हाल ही में, अंतर-सरकारी वार्ता के अध्यक्ष ने वैश्विक मामलों में भारत की मजबूत स्थिति को स्वीकार किया और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट के लिए समर्थन किया।

अंतर-सरकारी वार्ता (IGN) के बारे में

- यह संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) के अंतर्गत एक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य यूएनएससी में सुधार करना है।
- इसका उद्देश्य समकालीन भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को प्रतिबिम्बित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का विस्तार और पुनर्गठन करना है।
- इसका उद्देश्य सभी संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों के लिए निष्पक्ष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना है।

पाँच मुख्य मुद्दे

- सदस्यता की श्रेणियाँ:** क्या नये स्थायी सदस्यों को जोड़ा जाना चाहिए।
- वीटो शक्ति:** इस बात पर बहस होती है कि क्या नए सदस्यों को वीटो अधिकार होना चाहिए।
- क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व:** विभिन्न क्षेत्रों के लिए निष्पक्ष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना।
- विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का आकार:** प्रस्ताव में परिषद को 21-27 सदस्यों तक विस्तारित करने का सुझाव दिया गया है।
- कार्य पद्धतियाँ और महासभा के साथ संबंध:** निर्णय लेने में पारदर्शिता और दक्षता में सुधार।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में सुधार की आवश्यकता

- पुरानी सत्ता संरचना:** वर्तमान संरचना द्वितीय विश्व युद्ध के ठीक बाद 1945 की भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को दर्शाती है।
 - P5 सदस्य (यूएसए, यूके, फ्रांस, रूस, चीन) वीटो शक्ति के साथ स्थायी सीटें रखते हैं, यद्यपि वैश्विक शक्ति संतुलन में काफी बदलाव आया हो। परिषद दुनिया की वर्तमान आर्थिक और राजनीतिक वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती है।
- प्रतिनिधित्व की कमी:** अफ्रीका और लैटिन अमेरिका का कोई स्थायी प्रतिनिधित्व नहीं है, भले ही वे वैश्विक आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और शांति स्थापना और आर्थिक विकास में योगदान करते हैं।
 - विकासशील देशों का कम प्रतिनिधित्व है, जिससे UNSC की वैधता और नैतिक अधिकार कम हो जाता है।
- संदिग्ध वैधता और प्रभावशीलता:** P5 सदस्यों की वीटो शक्ति अक्सर गतिरोध की ओर ले जाती है, जिससे संकर्टों (जैसे, सीरिया, यूक्रेन) में प्रभावी कार्रवाई को रोका जा सकता है।
 - मानवीय संकर्टों के प्रति विलंबित या विफल प्रतिक्रियाओं ने इसकी प्रभावकारिता और निष्पक्षता पर चिंताएँ बढ़ा दी हैं।
- अधिक वैश्विक भागीदारी:** अधिक समावेशी सदस्यता व्यापक सहमति, विविध दृष्टिकोण और वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए साझा जिम्मेदारी सुनिश्चित करेगी।
 - सुधार परिषद के कार्यों को लोकतंत्र, समानता और जवाबदेही के सिद्धांतों के साथ संरेखित करने में मदद कर सकता है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारत का प्रयास

- जनसांख्यिकी और आर्थिक शक्ति: दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश और पाँचवां सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में, भारत महत्वपूर्ण क्षेत्रीय और वैश्विक प्रभाव रखता है।
 - इसका आकार, तकनीकी कौशल और रणनीतिक क्षमताएँ इसे वैश्विक निर्णय लेने में एक महत्वपूर्ण अभिकर्ता बनाती हैं।
- वैश्विक शांति स्थापना भूमिका: भारत संयुक्त राष्ट्र शांति सेना में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक रहा है, जिसके 250,000 से अधिक सैनिक आज तक 71 शांति अभियानों में से 49 में तैनात हैं।
- लोकतांत्रिक साख: दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में, भारत के शामिल होने से परिषद में लोकतांत्रिक संतुलन लाने का तर्क दिया जाता है जिसमें सत्तावादी राज्य शामिल हैं।
- परमाणु जिम्मेदारी: भारत एक परमाणु-सशस्त्र राज्य है, लेकिन 'नो फर्स्ट यूज' सिद्धांत का पालन करता है और परमाणु अप्रसार के लिए प्रतिबद्ध है, भले ही यह एनपीटी पर हस्ताक्षरकर्ता नहीं है, जिसकी वह भेदभावपूर्ण के रूप में आलोचना करता है।
- प्रमुख शक्तियों से समर्थन: भारत को पांच P-5 सदस्यों में से चार - संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, फ्रांस और यूनाइटेड किंगडम - से समर्थन प्राप्त हुआ है - जिनमें से सभी भारत की बढ़ती वैश्विक उपस्थिति को मान्यता देते हैं।

वैश्विक शासन में भारत की महत्वाकांक्षी भूमिका

- बहुध्रुवीयता, न कि एकध्रुवीयता: भारत एक ऐसी व्यवस्था के पक्ष में तर्क देता है, जिसमें शक्ति अधिक फैली हुई और प्रतिनिधि हो।
- वैश्विक दक्षिण एकजुटता: कम विकसित देशों के लिए विकास, खाद्य सुरक्षा, जलवायु न्याय और ऋण राहत जैसे मुद्दों की पैरवी करना।
 - भारत की G20 प्रेसीडेंसी के दौरान, इसने अफ्रीकी संघ को स्थायी सदस्य के रूप में समूह में शामिल किया, जो समावेशिता की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम था।
 - डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) मॉडल और वैक्सीन इक्विटी पर भारत का ध्यान वैश्विक चुनौतियों के लिए स्केलेबल, ओपन-सोर्स समाधान प्रदान करने की इसकी महत्वाकांक्षा को रेखांकित करता है।
- सामरिक स्वायत्तता: भारत संप्रभु मार्ग पर जोर देता है, किसी एक गुट के साथ गठबंधन का विरोध करता है।
- संस्थानों का लोकतांत्रिकरण: UNSC से लेकर IMF तक, भारत विकासशील देशों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए संरचनात्मक सुधारों की मांग करता है।

विरोध और चुनौतियाँ

- सुधारों पर आम सहमति: यूएनएससी सुधारों के लिए महासभा में दो-तिहाई बहुमत (193 सदस्यों में से 129) और सभी P5 सदस्यों की स्वीकृति की आवश्यकता होती है।
 - भारत को अफ्रीकी संघ, कैरिबियन समुदाय (CARICOM) और आसियान सदस्यों सहित विभिन्न क्षेत्रीय ब्लॉकों से समर्थन मिला है।
- चीन कारक: चीन, एकमात्र P5 सदस्य जो भारत की बोली के पक्ष में नहीं है, सबसे बड़ी बाधा बना हुआ है।
 - भारत के साथ इसकी भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता, सीमा विवाद और पाकिस्तान के साथ रणनीतिक गठबंधन इसके विरोध को आकार देते हैं।

- **रणनीतिक अस्पष्टता:** भारत क्वाड (अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ) का सदस्य है, यह ब्रिक्स के साथ भी सक्रिय रूप से जुड़ता है, जिसमें रूस और चीन शामिल हैं - पश्चिम से अलग-अलग विचार रखने वाले दो देश।
- **G4 की भूमिका:** भारत G4 समूह (भारत, जर्मनी, ब्राजील और जापान) का हिस्सा है जो सामूहिक रूप से स्थायी सीटों की मांग करता है।
 - हालाँकि, इटली, पाकिस्तान, मैक्सिको और मिस्र सहित एक काउंटर-ग्रुप, यूनाइटेड फॉर कंसेंसस (जिसे कॉफी क्लब भी कहा जाता है) द्वारा उनकी उम्मीदवारी का विरोध किया जा रहा है, जो नए स्थायी सदस्यों के बजाय समान क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व की वकालत करते हैं।
- **सुधार में धीमी प्रगति:** अंतर-सरकारी वार्ता (IGN) प्रक्रिया में चल रही चर्चाओं के बावजूद सीमित ठोस परिणाम देखने को मिले हैं।
 - आलोचकों का तर्क है कि बहस प्रायः ठोस कार्रवाई के बजाय अंतहीन चर्चाओं की ओर ले जाती है।

निष्कर्ष

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट के लिए भारत की दावेदारी उसकी बढ़ती वैश्विक हैसियत और बहुपक्षवाद के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
- हालाँकि चुनौतियाँ बनी हुई हैं, लेकिन निरंतर कूटनीतिक प्रयास और अंतर्राष्ट्रीय समर्थन अधिक समावेशी और प्रतिनिधि सुरक्षा परिषद का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

Source: BS



दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत का बढ़ता वैश्विक प्रभाव और कूटनीतिक प्रयास विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में स्थायी सीट के लिए उसके मामले को कैसे मजबूत कर सकते हैं, और इस लक्ष्य को प्राप्त करने में क्या चुनौतियाँ आ सकती हैं?

